संस्कृताध्ययन का कीर्तिग्रन्थ - संस्कृतशतकम्

डॉ. देव राज

नवप्रभातमायातं! जागृहि जागृहि।
उदेति दिशि पूर्वस्यां पश्य संस्कृतभास्करः॥[1]

अर्थात् जागो, जागो मेरे भाई! नई सुबह आई है। देखो तो सही, पूर्व दिशा में संस्कृत का सूरज उदित हो रहा है।

संस्कृत विश्व की प्राचीनतम् भाषा है। भारतीय इतिहास के अनुसार विश्व के आदिकर्ता ब्रह्मा के मुख से वेदमयी भाषा का जन्म हुआ।

अनादिनिधना नित्य वागुत्सृष्टा स्वयम्भुवा।
आदौ वेदमयी दिव्या यतः सर्वाः प्रवृत्तयः।।

सभ्यता के ऊषाकाल में संस्कृत भाषा का उदय हुआ और सर्वप्रथम भारतवर्ष को ही इस उदय का दर्शन हुआ। जिस समय समस्त विश्व समुदाय सांकेतिक भाषा से काम चला रहा था, उस समय भारत में संस्कृत भाषा-भास्कर ब्रह्म ज्ञान को उद्दीपित कर रहा था।

संस्कृत वाङ्मय रूपी समुद्र में अवगाहन करने से हमें संस्कृत भाषा की प्रौढ़ता तथा उपयोगिता का भान होता है। विश्व जगत का सर्वप्रथम एवं प्राचीनतम् ग्रन्थ ऋग्वेद संस्कृत भाषा में निबद्ध है। अतः संस्कृत क विकास वैदिककाल में ही नहीं अपितु इसके पूर्व ऋषि-हृदयों में हो चुका था। इस ग्रन्थ की भाषा एवं विषय-व्यापकता इसका स्वयं प्रमाण है।

संस्कृत भाषा के इतिहास को दो भागों में विभक्त किया जा सकता है। प्रथम भाग को वैदिक संस्कृतकाल तथा द्वितीय को लौकिक संस्कृतकाल कहा जाता है। वैदिक संस्कृत का रूप वेदों तथा उस काल में लिखे गए अन्य ग्रन्थों में उपलब्ध है। लौकिक संस्कृत पाणिनी व्याकरण के नियमों के अनुसार विकसित हुई है। वैदिक संस्कृत में केवल काव्य रचना हुई, परन्तु लौकिक संस्कृत में काव्य रचना के अतिरिक्त धर्मशास्त्र, अलंकार, छन्द, ज्योतिष आदि विभिन्न शास्त्रीय विषयों पर भी लिखा गया। लौकिक संस्कृत में काव्य के अन्तर्गत महाकाव्य, नीतिकाव्य, खण्डकाव्य, नाटक तथा गद्य साहित्य की रचना हुई। यह धारणा निर्मूल है कि संस्कृत भाषा की उपयोगिता केवल ग्रन्थ रचना तक ही सीमित थी। रामायण-महाभारत काल में संस्कृत का प्रचलन बोल-चाल की भाषा के रूप में हुआ था। द्वितीय शताब्दी ई. पूर्व में संस्कृत हिमालय तथा विन्ध्य पर्वत के मध्यमवर्ती क्षेत्र में बोलचाल की भाषा थी। ब्राह्मण ही नहीं अन्य वर्ग भी इसका प्रयोग करते थे। जो बोल नहीं सकते थे, वे भी इसे समझ अवश्य लेते थे। इस बात के स्पष्ट प्रमाण हैं कि संस्कृत नाटकों का अभिनय किया जाता था। यह तभी होता था जब संस्कृत जनभाषा रही हो।

संस्कृत भाषा को जहाँ संसार की प्राचीनतम् भाषा कहलाने का गौरव प्राप्त है, वहाँ यह भारत की अमूल्य एवं अनुपम निधि भी है। भारतीय संस्कृति समस्त भाषा-जननी संस्कृत के माध्यम से ही आजतक जीवित एवं अमिट है। ऐसी अमर भाषा को कुछ लोग भ्रान्तिवश मृत कह दिया करते हैं। ऐसा कहने वाले संस्कृत भाषा से अपरिचित हैं। जिस भाषा का पठन-पाठन आज भी अविरल गति से चल रहा हो, जिसमें निरन्तरर रचना कार्य हो रहा हो और जो अन्य भारतीय भाषाओं को अमरत्व प्रदान कर रही हो, वह भाषा मृत कैसे हो सकती है? संस्कृत भाषा को बोलने तथा समझने वाले संख्या में कम हो सकते हैं, परन्तु इसका महत्त्व किसी भी अन्य भाषा से कम नहीं है।

---

[1]- संस्कृतशतकम्, - 98, पृ. 39

वेद, पुराण एवं आर्ष काव्य की भाषा के रूप में संस्कृत शारदा का चरणामृत रही। संस्कृत भाषा के रूप में पथ्यौषधि है और काव्याभिव्यक्ति के रूप में संतर्पक, शीतल, सुविकसित जल। संस्कृत कविता की वह सन्तर्पण क्षमता आज भी अक्षुण्ण है।

जहाँ वैदिक काल में गुरुकुल, चारण, चरक, परिषद आदि के भारतीय धर्म-दर्शन साहित्य का प्रचार-प्रसार एवं सृजन हो रहा था, वहीं बौद्ध विहारों के माध्यम से संस्कृत साहित्य व दर्शन का प्रचार-प्रसार हो रहा था। मुस्लिम काल संस्कृत भाषा के लिए संक्रमण काल के रूप में जाना जाता है। इस काल में संस्कृत भाषा की विकास यात्रा अवरुद्ध तो नहीं हुई, परन्तु गति मन्द अवश्य पड़ गई थी। संस्कृत गुरुकुलों व पुस्तकालयों को नष्ट-भ्रष्ट एवं अग्निसात किया गया। 'बख्तियारखिलज़ी' ने विश्व प्रसिद्ध नालन्दा विश्वविद्यालय को भस्मसात कर दिया, जिसकी ज्वाला छः मास तक ठण्डी नहीं हो सकी थी। ऐसे समय में संस्कृत भाषा की मौखिक प्रणाली काम आई और संस्कृत भाषा ने दुर्गम पथों को पार करते हुए ब्रिटिश काल में दस्तक दी।

ब्रिटिश काल में संस्कृत भाषा की जड़ें इतनी गहरी व पुष्ट थीं कि किसी शासक-प्रशासक के लिएए उसे विनष्ट करना असम्भव था। लेकिन ब्रिटिश शासन भी इस पर प्रहार करने से पीछे नहीं रहा। उसने भी पक्षपात पूर्ण तरीके से अंग्रेजी भाषा को प्रोत्साहन दिया तथा संस्कृत भाषा को शासकीय ऊर्जा प्राप्त नहीं होने दी। इसके अनन्तर भी संस्कृत भाषा अपने विकास पथ पर अग्रसर रही।

संस्कृत भाषा के पठन-पाठन में आंगल मनीषियों की जो कुछ सहभागिता रही, उसे आधुनिक संस्कृत साहित्य का पुनर्जागरण काल कहा जा सकता है। इस पुनर्जागरण काल का प्रारम्भ कलकत्ता में ऐशियाटिक सोसाइटी की स्थापना के साथ हुआ। कलकत्ता के उच्च न्यायालय के विद्वान् न्यायाधीश सर विलियम जोन्स ने सर्वप्रथम संस्कृत पण्डितों के सानिध्य में रहकर संस्कृत सीखी। तत्पश्चात् उन्होंने कविकुल गुरु कालिदासस की नाट्यकृति अभिज्ञानशाकुन्तलम् को अंग्रेजी भाषा में अनुदित किया। अभिज्ञानशाकुन्तलम् का यह अंग्रेजी रूपान्तरर समूचे विश्व में संस्कृत की महिमा, गरिमा का शंखनाद बनकर गूंज उठा।

दासता की बेड़ियों में बंधा भारत राष्ट्र स्वतन्त्र होने के लिए छटपटा रहा था। प्रकृति के शाश्वत नियम परिवर्तन का समय ने पालन किया और भारत में स्वतन्त्रता की ऊषा का उदय हुआ। इस कालखण्ड को अभिराज राजेन्द्र मिश्र ने अर्वाचीन संस्कृत साहित्य का स्थापना काल माना है। इस शीर्षक की सार्थकता यही है कि इसी अवधि में संस्कृत वाङ्मय के विविध क्षेत्रों में नई-नई स्थापनाएं हुईं।

भट्टमथुरानाथ शास्त्री, प्रतिमानों पर आधारित जनसंवेदना से जुड़ी संस्कृत कथा की सर्जना का शुभारम्भ स्थापनाकाल में कर चुके थे। इस परम्परा को राजेन्द्र मिश्र ने आज तक जीवित रखा है। उन्होंने विविधाविध काव्यविधाओं में साहित्य सृजन किया और कर रहे हैं। यथा महाकाव्य, खण्डकाव्य, नाट्यसंग्रह, काव्यसंग्रह, कथासंग्रह, गीतिसंग्रह आदि।

अभिराज राजेन्द्र मिश्र 20वीं तथा 21वीं शताब्दी के ऐसे समर्थ कवि हैं, जिन्होंने काव्य, नाट्य, कथा एवं समीक्षा चारों ही क्षेत्रों में विपुल रचना की है। उनकी समस्त कृतियाँ जितनी ही मौलिक हैं उतनी ही अभिनव प्रस्थानात्मक, भाषा दृष्ट्या, शुद्ध एवं प्रासंगिक भी हैं। उनकी कहानियों, एकांकियों तथा गीतों में आज का भारत सांगोपांग चित्रित है। कवि ने समीक्षात्मक कृतियाँ भी लिखी हैं, जिनमें गहन चिन्तन विद्यमान है। उनकी हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय, शिमला में संस्कृत विभागाध्यक्ष के पद पर प्रतिष्ठित रहते हुए जून 1999 ईस्वी में वैजयन्त प्रकाशन इलाहाबाद से से संस्कृतशतकम् कृति प्रकाशित हुई, जो मेरे शोध लेख का विषय है। इस काव्यय में उन्होंने संस्कृत की उपयोगिता को 103 पद्यों में चित्रित करने का प्रयास किया है। यदि हमने अपने देश भारत को असभ्य और असंस्कृत होने से बचाना है तो व्यक्ति को अहर्निश

संस्कृत का अध्यन करना चाहिए।[2] संस्कृत के बिना भारतीय समाज शक्तिहीन है। इसका वर्णन बड़े ही सुन्दर ढंग से कवि ने किया है –

मातुः स्तन्यं बिना बालो यथा नो पुष्टिमर्हति।
समाजो भारतीयोऽयमपुष्टः संस्कृतं बिना।।[3]

संस्कृतशतकम् काव्य का कवि ने एक और नाम कल्पित किया है – कस्मात् अध्येयं संस्कृतम् अर्थात् संस्कृत का अध्ययन क्यों करना चाहिए? यह प्रश्न अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है। भारत राष्ट्र में आर्ष आचरण पद्धति की प्रतिष्ठा को यदि बरकरार रखना है तो उसके लिए संस्कृत का अध्ययन महत्त्वपूर्ण है।[4] संस्कृत भाषा के बिना भरत राष्ट्र भी पानी के लिए बावड़ी और फसल के बिना खेत के समान महत्त्वहीन है।[5] विशेषताओं की दृष्टि से इस काव्य को विभिन्न श्रेणियों में विभक्त किया जाा सकता है, किन्तु मैंने उपयोगिता की दृष्टि से यथामति इसे विभाजित किया है।

आध्यात्मिक दृष्टि से उपयोगिता

संस्कृत भाषा आध्यात्मिक ज्ञान के लिए उपयोगी है। मनुष्यों को जिस प्रकार जीवन यापन करने के लिए भोजन तथा पानी सामग्री आवश्यक है उसी प्रकार आध्यात्मिक ज्ञान व आत्म संस्कार के लिए संस्कृत भाषा अति महत्त्वपूर्ण है।[6]

शास्त्रीय दृष्टि से उपयोगिता

शास्त्रों के अध्ययन के लिए संस्कृत का अध्ययन बहुत ही आवश्यक है, क्योंकि वेद वेदांगों से सम्बद्ध पौराणिक एवं शास्त्रों में संचित इहलौकिक एवं पारलौकिक विषयों का ज्ञान राशि संस्कृत भाषा में ही निबद्ध तथा उपलब्ध है। अतैव संस्कृत भाषा शास्त्रीय दृष्टि से भी उपयोगी है।[7]

व्याकरणिक दृष्टि से उपयोगिता

व्याकरणिक दृष्टि से उपयोगी होने से संस्कृताध्ययन आवश्यक है, क्योंकि अन्य भाषाओं जैसे आंगल भाषा में जो कुछ लिखा जाता है उसे यथावत् नही पढ़ा जाता। इसे अभिराज राजेन्द्र मिश्र ने संस्कृतशतकम् में स्पष्ट करने का प्रयास किया है – आंगल भाषा में ठनज को 'बट' कहते हैं तो फिर उसी के समान वर्तनी वाले च्नज को 'पट' क्यों नहीं पढ़ा

---

2. असंस्कृतं भवेद्राष्ट्रं भरतानां न वैयर्था।
   तस्मात्संस्कृतमध्येयमहोरात्रं प्रतिक्षणम्।। वही – 1
3. वही – 3
4. सम्भवेन्नु कथं राष्ट्रे संस्कृताध्ययनं बिना।
   आर्षाचरणपद्धत्याः प्रतिष्ठाऽत्र महीयसी।। वही – 9
5. यथाक्षेत्रं बिना शस्यं यथा वापी विना जलम्।
   तथैव भारतंराष्ट्रं विना संस्कृत भारतीम्।। वही – 12
6. अनिवार्यं यथा भक्ष्यं पेयञ्च जीवितुं सुखम्।
   तथैव संस्कृतं ग्राह्यंज्ञानसंस्कारहेतवे।। वही –13
7. वैवेदांगसम्मिश्रं पौराणं शास्त्रसञ्चितम्।
   यत्र संरक्षितं यत्नैरध्येयं तन्नु संस्कृतम्।। वही ––14

जाता?[8] इसी तरह अन्य उदाहरण[9] देकर संस्कृत को व्याकरणिक दृष्टि से उपयोगी सिद्ध किया है, क्योंकि देववाणी संस्कृत इन सारे दोषों से दूर है। संस्कृत भाषा में जो कुछद लिखा जाता है उसे उसी रूप में पढ़ा भी जाता है।

उन्होंने शब्द रूपों एवं धातुओं का उदाहरण उद्धृत करते हुए संस्कृत भाषा की वैज्ञानिकता को प्रमाणित किया है। किस प्रकार तीनों वचनों में व्यवस्थित तीन प्रकार के पुरुष (प्रथम, मध्यम और उत्तम) अपने ही अनुकूल क्रियापदों से जुड़ सकते हैं, किसी असमान क्रियापद से नहीं।[10] यह तथ्य संस्कृत शतकम् में अत्यन्त मनोरम शैली में समझाया गया है।

संस्कृतशतकम् का एकमात्र उद्देश्य है संस्कृत उपादेयता को रेखांकित करना। यह संस्कृत भाषा नीति, धर्म, संस्कृति, विश्व-बन्धुत्त्व, सर्वधर्म सम्भाव आदि की एकमात्र स्रोत है।

राष्ट्रीयता के सूत्र में बाँधने वाली भाषा

संस्कृत भाषा हमें राष्ट्रीयता के सूत्र में बाँधती है। संस्कृत भाषा का उच्चारण प्रयोग जैसा भारत के उत्तर में किया जाता है वैसा ही दक्षिण तथा पूर्व-पश्चिम में किया जाता है। इसी तरह विश्व के अन्य देशों में भी किया जाता है। या यूं कहा जा सकता है कि सम्पूर्ण पृथ्वी तल पर कहीं भी देववाणी के शब्द प्रयोग में परिवर्तन नहीं किया जा सकता।[11] संस्कृत भाषा शब्दों का प्रयोग वह चाहे गाय चराने वाला भोला किसान हो या बुद्धिमान सुपठित व्यक्ति, दोनों ही संस्कृत काा प्रयोग समान रूप से करते हैं।[12]

वैज्ञानिक दृष्टि से उपयोगिता

संस्कृत भाषा वैज्ञानिक दृष्टि से भी उपयोगी है। सभी वैज्ञानिक औषधियों का वर्णन अथर्ववेद में किया गया है। इसी तरह आज के युग में कम्प्यूटर की दौड़ में भी संस्कृत भाषा कम्प्यूटर के लिए सबसे उपयुक्त बताई गई है। अतः विशिष्ट जानकारी के लिए हमको मूलग्रन्थों की शरण में ही जाना पड़ता है और वे सब ग्रन्थ संस्कृत में निबद्ध हैं।

ज्योतिष एवं कर्मकाण्ड की दृष्टि से उपयोगिता

यदि किसी व्यक्ति को अपने भूत, भविष्य तथा खगोल, भूगोल, समय की लघुतम् ईकाइयों की गणनाा करनी हो तो उसे ज्योतिष शास्त्रादि का अध्ययन करना पड़ेगा, क्योंकि इस विषय के मूल ग्रन्थ संस्कृत में ही उपलब्ध हैं। अतः इससे संस्कृत की उपयोगिता सिद्ध होती है।[13]

गूढ़ रहस्य की दृष्टि से उपयोगिता

---

8. बी. यू. टी. बटेव्याहुराङ्गल्यां यदि विशारदाः।
   पी. यू. टी. पुटेतीव कथमुच्चार्यते भृशम्।। वही - 16
9. वही - 17, 18, 21
10. त्रिविधैः पुरुषैरेव प्रथमोत्तममध्यमैः।
    क्रियानिष्पादकैश्त्र त्रिभिर्हि वचनैस्तथा।। वही - 29-46
11. निखिले भारते राष्ट्रे किञ्च पूर्णे महितले।
    देवभाषापदानान्तु रूपमेकं विलोक्यते।। वही - 26
12. भवेद्गोचारको ग्राम्यो नगरो वा महामतिः।
    उभावैव पदं सर्वं त्वभिधतः यथायथम्।। वही - 24
13. ज्यौतिषं कर्मकाण्डञ्च मन्त्रतन्त्रादिविस्तरः।
    संस्कृतेऽस्ति यतसर्वं ततोऽध्येयन्तु संस्कृतम्।। वही - 64

संस्कृतशतकम् में अभिराज मिश्र ने आध्यात्मिक जगत के गूढ़ रहस्यों को जानने के लिए संस्कृत की उपयोगिता को कहा है। मनुष्य किन कारणों से उत्पन्न होता है और किन कारणों से मृत्यु को पाता है? मृत्यु के पश्चात् जीव अलसित गति से कहाँ चला जाता है या जन्म से पहले वह क्या और कहाँ था? सञ्चित कर्म किस प्रकार भाग्य का रूप धारण करते हैं इन सभी गूढ़ रहस्यों के ज्ञान हेतु संस्कृताध्ययन की आवश्यकता है।[14] क्योंकि इन गूढ़ प्रश्नों का समाधान मात्र संस्कृत में उपनिबद्ध षड्दर्शनों में होता है।

ब्रह्मज्ञान व सृष्टिज्ञान की दृष्टि से उपयोगिता

संस्कृत भाषा ब्रह्मज्ञान के लिए उपयुक्त है। मनुष्य किस प्रकार इस जीवलोक में रहकर ब्रह्म ज्ञान को प्राप्त करता है, इस लोक की उत्पत्ति किस प्रकार हुई[15], इन रहस्यों को ज्ञात करने के लिए राजेन्द्र मिश्र ने संस्कृत अध्ययन को आवश्यक बतलाया है। यह विषय वेद में सांगोपांगता से समझाया गया है।

मोक्ष प्राप्ति की दृष्टि से उपयोगिता

क्रोध, लोभ, मोह, मद, ईर्ष्या आदि क्लिष्ट बन्धनों को विवेकपूर्ण विधि से त्यागने के लिए संस्कृत का अध्ययन आवश्यक है।[16] पापादि को त्याग कर मोक्ष प्राप्ति के लिए संस्कृत ही एकमात्र पथ-प्रदर्शिनी है।[17]

सभी भाषाओं की जननी

संस्कृत को सभी भाषाओं की जननी कहा गया है, क्योंकि सभी भाषाओं का जन्म संस्कृत से ही हुआ है। जैसे आंग्ल भाषा में ैपगजल षष्टि, जीतमम त्रि, ब्ंउमस क्रेमल इत्यादि कई ऐसे शब्द हैं जिनका उद्गम संस्कृत से ही हुआ है।[18] अतैव सभी भाषाओं की जननी होने के कारण संस्कृताध्ययन आवश्यक है।

भाषा नियमों के निर्माता प्रसिद्ध भाषा वैज्ञानिक ग्रिम, ग्रासमैन तथा वर्नर ने भी यही बताया है कि भारोपीय भाषा परिवार ही विश्व भाषाओं का मूल है और इस परिवार की भी प्रमुखतया भाषा संस्कृत ही है।

वस्तुतः अभिराज राजेन्द्र मिश्र प्रणीत संस्कृतशतकम् संस्कृत भाषा की गीता के समान है। ह संस्कृत की कोरी प्रशंसा भर नहीं है, प्रत्युतः संस्कृत की प्रासंगिकता, उपयोगिता, वैज्ञानिकता तथा उत्कृष्टता के साधक ठोस प्रमाणों का एक मनोरम संकलन है। इस लघु काव्य को पढ़ते ही देववाणी सीखने की विलक्षण प्रेरणा एवं जागृति प्राप्त होती है। दिल्ली में आयोजित विश्व संस्कृत सम्मेलन में समापनोत्सव के मुख्यातिथि माननीय राजा कर्म सिंह ने भी संस्कृतशतकम् के अनेक श्लोकों को उद्धृत कर श्रोताओं को प्रेरित किया था –

संस्कृतेन प्रभातं स्यान्मध्यन्दिनमथो तथा।
संस्कृतेन भवेत्सन्ध्या संस्कृतेनैव यामिनि।।[19]

.

[14]. वही – 65-68
[15]. वही – 70-73
[16]. वही – 77
[17]. वही – 75
[18]. वही – 81-82
[19]. वही – 99